Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

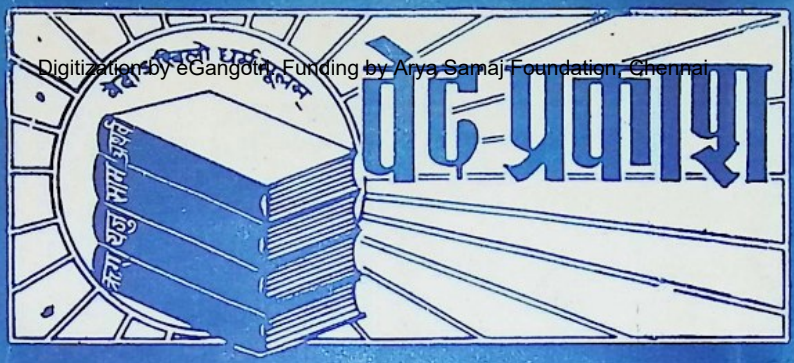

सात मर्यादाएं

सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरो गात् ।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीळे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ ॥

—ऋ० १०।५।६॥

(कवयः) ज्ञानी महात्माओं ने (सप्त मर्यादाः) सात मर्यादाएं (ततक्षुः) बनाई हैं, (इत्) यदि (तासाम् एकाम्) उनमें से एक का भी (अभिगात्) उल्लंघन करता है, तो वह (अंहुरः) पापी हो जाता है । किन्तु वह मनुष्य (ह) सचमुच (आयोः) प्रगति का, उन्नति का, अभ्युदय का, ज्ञान का (स्कंभ) आधार है, जो (धरुणेषु) विपत्ति के अवसरों, धैर्य की परीक्षा के समयों पर, (पथां विसर्गे) मार्गों के चक्कर पर भी (उपमस्य) उपमा देने के योग्य भगवान् के (नीड़े) आश्रय में (तस्थौ) स्थिर रहता है।

१. अहिंसा=मन, वचन, कर्म से किसी को पीड़ा न पहुंचाना, २. सत्य=यथार्थ ज्ञान प्राप्त करके तदनुसार आचरण करना, ३. अस्तेय=पराए पदार्थ को स्वामी की आज्ञा के बिना कभी न लेना, ४. ब्रह्मचर्य=व्यभिचार-त्याग, ५. शौच=शारीरिक तथा आत्मिक शुद्धि रखना, ६. स्वाध्याय=आत्मचिन्तन, वेदाध्ययन, ७. ईश्वरप्रणिधान=सब कर्म प्रभु के अर्पण करना, ये सात मर्यादाएं हैं ।

जो मनुष्य इन सात में से किसी का उल्लंघन करता है, वह घोर पाप करता है । सात मर्यादाओं से पांच ज्ञानेन्द्रियां, एक जिह्वा तथा एक गुह्येन्द्रिय भी अभिप्राय हो सकता है, इनके अतिक्रम से भी पाप होता है। वह मनुष्य सचमुच वीर है, बहादुर है, जो विपत्ति के समय तथा जहां नाना मार्ग उपस्थित हों, अर्थात् जहां कर्त्तव्य का निश्चय न होता हो, ऐसी दशा में धर्म पर स्थिर रहे, मर्यादा का उल्लंघन न करे । ऐसे ही मनुष्य संसार में यश एवं प्रतिष्ठा पाते हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

स्वामी वेदानन्द कृत 'वैदिक धर्म' से

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बोध-कथा

इन्सान की कसौटी

भारत के समाज-सुधारक स्वामी विवेकानन्द एक बार संयुक्त राज्य गए। वहां उन्हें एक महानगर के एक राजपथ पर जाने का अवसर मिला। वे एकाकी अपने भगवे वस्त्र पहने जा रहे थे कि कुछ दबंग युवा महिलाओं ने उनके भगवे कपड़ों का उपहास किया और बड़ी हिकारत उपेक्षा से बोलीं—"देखो, इस आदमी को देखो और इसके कपड़े देखो।"

स्वामी जी एक क्षण चुप रहे। उन्होंने उन महिलाओं की ओर देखा तो वे सब मिल कर उनका और उनके कपड़ों का उपहास करने लगीं। स्वामी जी उन महिलाओं से बड़ी नम्रता से परन्तु ओजस्वी शब्दों में बोले—"देवियो, जहां तक मैं आप लोगों की वेशभूषा और बोलचाल से अन्दाज करता हूं, उससे कह सकता हूं कि किसी भी व्यक्ति चाहे वह आदमी हो या औरत, उसकी पहचान उसकी वेशभूषा और पहरावे से नहीं होती, उसकी असली पहचान तो उसके अपने चरित्र, व्यवहार और इन्सानियत से होती है। अब आप लोग स्वयं फैसला करें कि मेरे कपड़े उपहास के पात्र हैं या आप जैसी शिक्षित महिलाओं का एक विदेशी फकीर यात्री के साथ आपका यह व्यवहार ? यही कह सकता हूं कि आप उस देश के निवासी हैं जहां दर्जी आपका व्यक्तित्व बनाता है, और मैं उस देश का प्रतिनिधि हूं जिसका परिचय उसके चरित्र से होता है।"

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ४५, अंक ११ वार्षिक मूल्य : बीस रुपये जून १९९६

सम्पा॰ अजयकुमार आ॰ सम्पादक : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

मानवधर्म और आर्यसमाज

डॉ॰ प्रेमचन्द श्रीधर

१. मानव ही केन्द्र-बिन्दु

महर्षि वेदव्यास ने महाभारत के शान्ति पर्व में अपना जो दार्शनिक पक्ष रखा उसके अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि के समस्त व्यापार इसी मनुष्य रूपी केन्द्र बिन्दु के चारों ओर घूमते दिखाई देते हैं । वेदव्यास का विश्वास लोक में कर्मवाद और दैववाद से भी ऊपर अध्यात्म ब्रह्म या आत्मतत्त्व में है । उन्होंने घोषणा की–

गुह्यं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि ।
नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित् ॥

–शान्ति पर्व १८०।१२

जिस मानव की इतनी महत्ता है और जो विश्व की परिधि का केन्द्र बिन्दु स्वीकार किया गया है, वह यथार्थ में है क्या ? इस पर गम्भीरता से विचार करें तो स्पष्ट है कि वह मात्र स्थूल शरीर नहीं है । जिस अन्नमय कोश के रूप में हम मनुष्य के दर्शन करते हैं, वह भी सत्य अवश्य है । इस अन्नमय देह का पोषण, फिर प्रजनन के द्वारा सृष्टिक्रम में सहभागी होना यह तो मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है, जो अन्य पशुओं में भी स्वभावतः दृष्टिगोचर होती है । यह तो मनुष्य का केवल पशु भाग है ।

इस पशु भाग के अतिक्ति मनुष्य में एक दैवी अंश है । वह है इसका मनोमय और विज्ञानमय होना । भारतीय संस्कृति के अनुसार मनुष्य मर्त्य और अमृततत्त्व का संयोग है । शरीर मर्त्य और आत्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
अमृतत्व भाग है । इसी अमृतत्व भाग का चैतन्य रूप मन के रूप में पार्थिव शरीर में सभी कार्यों का केन्द्र है । यह मन बुद्धि से संयुक्त होकर इन्द्रियों के द्वारा कार्यों को सम्पन्न कराता है । मन का कार्य है संकल्प-विकल्प तथा बुद्धि का कार्य है निर्णय करना और इन्द्रियो का कार्य है उस निर्णय को क्रियान्वित करना । वस्तुतः मन भी एक देव है । भारतीय संस्कृति के महान् अध्येता और चिन्तक डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल उपनिषत् के वचन–**''एको देवः सर्वभूतेषु गूढः ।''** के आधार पर इस गूढ़ देव को जीवन के हर कार्य में अधिकाधिक रूप में प्रकट करना यह मानव का दैवी संदेश या कार्य मानते हैं । उनका विचार है कि मर्त्य और अमर्त्य दोनों भागों का जब तक एक-सा विकास नहीं होगा तब तक मानव अतृप्त और अपूर्ण रहेगा । दोनों के समन्वय के बिना सन्तुलित मानव का आविर्भाव हो ही नहीं सकता। मनुष्य में मानवता का दैवी गुण जागृत करना ही अध्यात्म है । यही मानव धर्म है ।

जब हम प्राकृतिक धरातल पर अपना जीवन जीते हैं तब भोग प्रधान प्रवृत्ति बढ़ती जाती है और हमारा पशु भाग अधिकाधिक क्रियाशील होता चला जाता है जो अन्ततः हिंसा, लोभ, द्वेष और विनाश की ओर ले जाता है, जीवन में स्वार्थपरता अधिकाधिक बढ़ जाती है और जब इस प्रकृति प्रधान भोगमय जीवन से ऊपर उठकर अध्यात्म के धरातल पर मानव मन को ले आते हैं तो अमृतत्व का विकास होता है और हम भोग प्रधान संस्कृति को छोड़कर त्यागमय चिन्तन से अपना सम्बन्ध जोड़ते हैं । पशु भाग को छुड़ा कर मानव को अध्यात्म के धरातल पर समन्वयात्मक जीवन जीने के लिए उसमें दैवी गुणों का विकास, यही आध्यात्मिक प्रगति है । सुख और शान्ति का सच्चा मार्ग है । इसी मार्ग का नाम ही यज्ञीय भाव है । इन्हीं यज्ञीय-भावों का विकास ही **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का भाव है । यही मनुष्यत्व है । यही मानव धर्म है । वेदव्यास के ही शब्दों में–

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।

जो अपने लिए अच्छा नहीं लगता दूसरों के लिए भी वैसा कर्म न करे । यही दैवी भाव का आधार है । शरीर की आवश्यकताएं हैं, जब तक शरीर है, भोग भी रहेगा । भोग शरीर की व्यवस्था के लिए, स्थिति के लिए साधन तो है, साध्य नहीं है। शरीर की भोग-प्रधान आवश्यकताओं को साधने के साथ-साथ त्याग-प्रधान अध्यात्म-संस्कृति का विकास करना भी अत्यन्त आवश्यक है । अन्यथा केवल पशुत्व प्रधान संस्कृति ही शेष रहेगी और उसका परिणाम विनाश और दुःख के अतिरिक्त और कुछ नहीं । वर्तमान परिस्थितियां, जीवन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और चिन्तन मानव को तीव्र गति से भोग प्रधान संस्कृति और मान्यताओं से जोड़ रही है। मानव आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है । जिसे आज धर्म के स्वरूप में मानव ने स्वीकार कर लिया है, वह धर्म नहीं है। विभिन्न प्रकार की मान्यताओं, धारणाओं, उपासना-पद्धतियों, रीतिरिवाजों के आधार पर जो केवल जीवन-पद्धतियां ही तो हैं, ये सब अलगाव और विशेष प्रकार की संकीर्णता को जन्म देती हैं, व्यक्ति के व्यक्तित्व में उदार चेतना, सामंजस्य और स्नेह के स्थान पर सम्प्रदायवाद, जातिवाद, वर्गवाद, रूढ़िवाद, कर्मकाण्ड और अन्ध-विश्वासों को बढ़ावा देने के साथ-साथ गुरुडम और ढोंग का पोषण करती हैं । अपने-अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान करने वाले अग्रणी लोग सामान्य जनजीवन में घृणा का इतना विष घोल रहे हैं कि धर्म के नाम से ही अब लोग घृणा करने लगे हैं । ईश्वर को भी मानने से आज का बुद्धि प्रधान, तर्क प्रधान मनुष्य इन्कार करने लगा है–

खुदा के बन्दों को देख करके खुदा से मुनकिर हुई है दुनिया ।
कि जिसके बन्दे हैं इस तरह के, वह कोई अच्छा खुदा नहीं है ।।

सत्य यह है कि हम हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन, किरानी और पुराणी सब हैं, परन्तु मनुष्य नहीं हैं। उन अलग-अलग वृत्तों में खड़े होकर हम वामन से विराट् या विष्णु होना ही नहीं चाहते । हम शिव हैं परन्तु अपने नित्य के जीवन व्यवहार के आधार पर केवल चलते-फिरते शव हैं । हमारी समस्त चेतना जड़ता से प्रभावित हो चुकी है । इसीलिए मानव शरीर तो है परन्तु उसमें मानव-धर्म लुप्तप्राय हो चुका है । मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है–

वह मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।
यह पशु प्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे ।।

अग्नि में अग्नित्व, जल में जलत्व, वायु में गतित्व न हो तो क्या आप इन्हें अग्नि, जल और वायु का नाम देंगे ? ठीक इसी तरह मानव में मानवत्व का गुण न हो तो वह मनुष्य नहीं रहेगा–

सभी कुछ हो रहा है इस तरक्की के जमाने में ।
मगर ये क्या गजब है आदमी इन्सां नहीं होता ।।

अंग्रेजी में एक शब्द है (Sane) इसका अर्थ होता है समझदार (Sensible person) पर आज का आदमी इन्सां बनने की बजाय (Insane) अर्थात् (Senseless person) बनता जा रहा है । उसके अन्दर की (Sanity) स्वस्थचित्तता खो गई है । विवेक (Soundness of

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
judgement) समाप्त हो गया है । यही मानवता का आधार है । इसे जागृत करना मानव धर्म का जागरण है । पशु प्रवृत्ति पर दैवी भावनाओं की, यज्ञीय भाव की विजय ही मानव धर्म है ।

काश ! धर्म के इसी सच्चे अर्थ को विश्व का जनमानस आत्मसात् कर पाता तो विश्व का मानव 'आर्य' अर्थात् श्रेष्ठ गुण कर्म स्वभाव का व्यक्ति बन जाता । आर्य जातिवाचक नहीं गुणवाचक संज्ञा है । और वेद का उद्घोष है–**'कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।'** हम ने इस भाव को भी संकीर्ण अर्थों में ग्रहण किया है, समझा है, इससे बढ़कर दुःख की कोई बात नहीं हो सकती ।

२. धर्म का विकृत रूप

हम ने ऊपर की पंक्तियों में मानव को श्रेष्ठतम योनि स्वीकार किया है । मानवता और मानव धर्म की भी चर्चा की है, यदि धर्म के प्रति वैदिक दृष्टिकोण को भी समझ लिया जाए तो भाव अधिक स्पष्ट हो जाएगा ।

धर्म का उद्देश्य मनुष्य को पूर्ण बनाना है अर्थात् शारीरिक, आर्थिक, मानसिक और धार्मिक अवस्थाओं की सम्पूर्णता, परन्तु प्रचलित मतमतान्तर या विभिन्न सम्प्रदाय इसकी ओर ध्यान नहीं देते। उसका परिणाम है भ्रम और भटकाव ।

धर्म मानसिक दासता से मुक्त करता है, बांधता नहीं है । जितने भी मतमतान्तर या सम्प्रदाय हैं किसी व्यक्ति विशेष से जुड़े हुए हैं, जिन्हें कि प्रायः अवतार, सिद्धपुरुष, ईश्वरीय गुणों से युक्त महापुरुष के रूप में स्वीकार कर लिया गया है । उदाहरण के रूप में यदि इस्लाम में मुहम्मद साहब पर ईमान न लाया जाए तो व्यक्ति 'काफिर' संज्ञा वाला हो जाता है यही अवस्था ईसाई, जरथुष्ट और पारसी मत के साथ भी है ।

प्रायः सभी मतों की कम या अधिक यही अवस्था है और इन मतों ने मनुष्य को मानसिक दासता की जंजीरों में और अधिक जकड़ दिया है । हिन्दू समाज में भी बौद्ध, जैन, शैव, शाक्त, वैष्णव, गोरखपन्थी, कबीरपन्थी अनेक शाखाएं और उपशाखाएं विद्यमान हैं। यद्यपि यह सब मत हैं, विचार हैं और उनके अनुरूप जीवन-पद्धतियां भी हैं परन्तु वैचारिक विभिन्नता के कारण एक दूसरे के प्रति मानसिक कठोरता, रूढ़िवादिता और कटुता ने सम्प्रदायों का रूप धारण कर लिया है । धर्म की भावना लुप्त होकर अपना सिर धुन रही है । धर्म ने ठेकेदारी का रूप ले लिया है और विज्ञापन के आधार पर उसका भी व्यवसाय हो रहा है । धर्म अन्य वस्तुओं की भांति क्रय और विक्रय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
की वस्तु बन गया है । इसलिए मानवता और मानव मूल्यों का ह्रास होकर समस्त विश्व कलह और हिंसा की लपेट में आ गया है । धर्म न किसी ग्रन्थ का नाम है, न ग्रन्थ में कहे गए उन उपदेशों का नाम जो सुने जाते हैं या सुनाए जाते हैं । धर्म नाम है धारण शक्ति का, जिसके आश्रय पर मानवता टिकी रह सकती है । और वही मानव धर्म है अन्य सब मत हैं, विचार हैं, जो जोड़ने का नहीं, तोड़ने का कार्य कर रहे हैं तो धर्म की वैदिक परिभाषा क्या होगी ? इसी का संकेत हम करेंगे ।

३. धर्म की वैदिक परिभाषा

लोक और परलोक को बनाने वाले, जन्म जन्मान्तरों में भी जीवों के साथ जाने वाले तथा जीवन को दानवता, पशुता, असुर भाव से हटाकर मानवता, स्नेह, सामंजस्य, सहानुभूति, सहयोग और सेवा का भाव जगाकर सच्चा मानव बनाने वाले गुणों का नाम धर्म है । सब कुछ शरीर के भस्म होने पर इसी संसार में छूट जाता है। परन्तु एक सच्चे मित्र की तरह धर्म (अर्थात् श्रेष्ठ कर्म) मनुष्य के साथ जाता है ।

एक एव सुहृद् धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद् हि गच्छति ।। —मनु०

धर्म को इसलिए मनु ने धारण शक्ति के रूप में स्वीकार किया है—

धारणाद् धर्म इत्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः ।। —मनु०

समस्त प्रजाओं को धारण करने की शक्ति का नाम ही धर्म है। और धर्म की परिभाषा एकांगी न होकर सार्वभौम है अर्थात् इहलोक और परलोक में जो अभ्युदय का, कल्याण का कारण बने। वैशेषिक दर्शन के अनुसार—

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः ।।

जिससे लोक में अभ्युदय अर्थात् सांसारिक रूप से उन्नति और विकास हो तथा जो मोक्ष प्राप्ति में भी सहायक हो वही धर्म है ।

महर्षि व्यास के वचन हैं कि धर्म सदा रहता है और सुख दुःख सदा रहने वाले नहीं हैं—

धर्मो नित्यः सुखदुःखे त्वनित्ये ।। —महाभारत

उपनिषदों की घोषणा है कि संसार में सत्य से बड़ा धर्म नहीं है और झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं है—

न हि सत्यात् परो धर्मो नानृतात् पातकं परम् ।। —उपनिषद्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai.
भारतीय संस्कृति ने इसलिए समस्त धर्म को आचरण अर्थात् सदाचरण के रूप में स्वीकार किया और उसका सार है अहिंसा का भाव–

आचारः परमो धर्मः । अहिंसा परमो धर्मः ॥

प्राणिमात्र से वैर भावना का त्याग करना परम धर्म है ।

इन सभी धर्म के गुणों को मनु महाराज ने सूत्र रूप में कहा है–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म-लक्षणम् ॥

–मनु० ६।६२

१. धृतिः–धैर्य, किसी भी परिस्थिति में धैर्य का त्याग न करना।

२. क्षमा–सामर्थ्य होते हुए भी बदले की भावना का त्याग।

३. दमः–मन की वृत्तियों का वशीकरण, इसी का नाम दम है।

४. अस्तेयम्–अन्याय से किसी के धन या वस्तु का ग्रहण न करना ।

५. शौचम् (शुद्धि)–शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की पवित्रता । सफाई रखना, यह शारीरिक शुचिता का अंग है और कुविचारों तथा दुष्ट वृत्ति को मन में न लाना, यह मानसिक शौच है ।

६. इन्द्रियनिग्रहः–शरीर के सभी कार्य व्यापार इन्द्रियों के द्वारा होते हैं । इन इन्द्रियों को अपने वश में रखना इन्द्रियनिग्रह कहलाता है ।

७. धीः (बुद्धि)–बुद्धि को बल शारीरिक बल से मिलता है।

८. विद्या–विद्या का लाभ केवल पढ़ने लिखने से नहीं उसका उपयोग ज्ञान प्राप्त करके तदनुसार जीवन बिताने से है ।

९. सत्यम्–सत्य को वैसे धर्म का मूल माना गया है और **'न हि सत्यात् परो धर्मः'** इसे सब से बड़ा धर्म माना गया है । मन–वाणी और कर्म तीनों से सत्य का आचरण ।

१०. अक्रोधः–गुस्सा न करना, स्वाभाविक क्रोध से भी बचना, आसुरी शक्तियों का सामना करने में जब धैर्य टूट जाता है, जो धर्म का प्रथम लक्षण है तब अपनी रक्षा हेतु 'मन्यु' का भाव जागना, अपनी रक्षा के लिए आवश्यक भी हो जाता है परन्तु 'मन्यु' जब प्रतिकार की भावना से हिंसा का रूप धारण कर लेता है तो बड़े से बड़े अनर्थ का कारण भी हो सकता है, इसी से बचना अक्रोध है ।

इन सब दस के दस लक्षणों का विपरीत रूप अधर्म है । वही अधर्म के लक्षण हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म के समस्त सार को 'अहिंसा' का नाम दिया गया है। इसलिए भारतीय संस्कृति ने **'अहिंसा परमो धर्मः'** और इन सब लक्षणों को जीवन में आचरण में उतारने पर भी बल दिया है। **'आचारः परमो धर्मः।'** अर्थात् सदाचरण ही परम धर्म है। यही धर्म की वैदिक परिभाषा है। **'धर्मेण हीनः पशुभिः समानः'** जो धर्म से हीन है, वह पशु के समान है।

४. धर्म के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द का मन्तव्य

मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीनों काल में सब को एक-सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना, और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है।

(क) सर्वतन्त्र-सिद्धान्त-अर्थात् सामान्य सार्वजनिक धर्म, जिस को सदा से सब मानते आए, मानते हैं और मानेंगे भी, इसीलिए उसको 'सनातन नित्य धर्म' कहते हैं, कि जिसका विरोधी कोई भी न हो सके।

(ख) धर्माधर्म-जो सदा पक्षपातरहित न्यायाचरण सत्यभाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है उसको 'धर्म', और जो पक्षपातसहित अन्यायाचरण मिथ्याभाषणादि ईश्वराज्ञाभंग वेदविरुद्ध है, उसको 'अधर्म' मानता हूं। —स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः

५. आर्यसमाज की स्थापना क्यों की गई ?

महर्षि दयानन्द की हार्दिक इच्छा थी कि सब भारतवासी परस्पर एक मत होकर एक ही रीति से देश का सुधार करें तो भारत देश का कल्याण हो। इस हेतु भारत के विभिन्न मतों और जातीय विभागों के नेताओं की एक सभा बुलाई गई। यह सभा दिल्ली में ही हुई। निमन्त्रण में पंजाब के सुप्रसिद्ध सुधारक कन्हैयालाल जी अलखधारी, श्रीयुत नवीनचन्द्र राय, श्रीयुत हरिश्चन्द्र चिन्तामणि, सर सय्यद अहमद, श्री केशवचन्द्र सेन तथा इन्द्रमणि जी सभी महानुभाव पधारे थे। उस सभा में ब्रह्मसमाज के नेता केशवचन्द्र सेन ने कहा-'पृथक्-पृथक् सभा स्थापित करने के स्थान पर यदि हम मिलकर एक ही धर्म का प्रचार करें तो बहुत अच्छा हो।' सभा में बहुत विचार हुआ परन्तु परिणाम कुछ न निकला। यदि उस समय एकत्रित हुए देश के धार्मिक और जातीय नेता ऋषि की दूरदर्शिता को देख सकते तो निश्चय ही आज हमारा देश संसार की अन्य जातियों के साथ गर्व से सिर ऊंचा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
किए होता ।

महर्षि दयानन्द भिन्न मतों के चलने के अनन्तर उनसे उत्पन्न होने वाले परिणामों को दीर्घ दृष्टि से देख रहे थे । इस कारण उन्होंने किसी भी नये पन्थ को न चलाकर 'प्राचीन वैदिक धर्म' को ही नवीन अवस्थाओं को दृष्टि में रखते हुए पुनरुज्जीवित किया । अपनी संगठित की हुई समाज का नाम 'ब्रह्म' को मानने वाली या और कुछ न मानने वाली समाज न रखकर आर्यों की समाज रखा । इसी उद्देश्य से वे सर्वत्र 'आर्य' शब्द का प्रयोग करते थे । आर्यभाषा, आर्यदेश, आर्यसमाज । सब जगह 'आर्य'—इसी शब्द के प्रचार के नीचे एक बड़ा गहरा भाव काम कर रहा था । अन्य शब्दों के साथ संकुचितता का भाव जुड़ा होने के कारण केवल इसी शब्द पर बल दिया । संसार की समस्त जातियों का समावेश इसी एक शब्द में गुणवाचक संज्ञा होने के कारण हो सकता था । महर्षि का केवल एक ही आग्रह था कि सब वेदों को धर्म का आधार स्वीकार कर लो । यह कोई कठिन बात नहीं थी, परन्तु दुःख है कि दुराग्रह के कारण यह स्वीकार न हुआ । मनु महाराज का वचन है—**'वेदोऽखिलो धर्म-मूलम् ।'** इसलिए महर्षि ने वैदिक सभ्यता के आदर्श की रक्षा के हेतु उसको क्रियात्मक रूप देने के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की । महर्षि का जीवन एक आदर्श का क्रियात्मक फल था—एक Ideal का Actual रूप था । महर्षि चाहते थे कि आर्यसमाज वही कार्य करे । वैदिक धर्म को (Ideal) आदर्श रूप में रखा और आर्यसमाज उसका (Actual) क्रियात्मक रूप । इसी विचार से आर्यसमाज की स्थापना की गई ।

६. वेद के आदर्श ही मानव धर्म के आदर्श हैं

आर्यसमाज की स्थापना के पीछे सत्य सनातन धर्म के आधार, वेद की सार्वभौम शिक्षाओं को विश्व में जन-जन तक पहुंचाकर मानव-मानव में बन्धुत्व की पवित्र चेतना जगाकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव को लाना था। यही सच्चा मानव धर्म है।

आर्यसमाज के दस नियम आस्तिकता और बन्धुत्व के परम भाव पर आधारित हैं। इनमें लेश मात्र भी साम्प्रदायिकता, जातीयता, वर्गवाद, भाषावाद, प्रान्तवाद, संकीर्ण राष्ट्रवाद, वर्णभेद आदि के लिए स्थान नहीं है। वेद सब के लिए समान रूप से कल्याणी वाणी है। वेद के ही शब्दों में—

'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।'

वेद ने किसी को भी बड़ा छोटा स्वीकार नहीं किया। सब प्रभु के दरबार में समान हैं—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दस नियमों में पांचवें से लेकर दसवें तक सभी विश्व के सब प्राणियों के साथ कैसे बरतें इसी का उपदेश है । छठे में तो स्पष्ट कहा है–

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। और सातवें, आठवें, नौवें और दसवें नियम में सिवाय मानव धर्म की शिक्षा के और कुछ है ही नहीं। सात से दस तक सभी नियम हम यहां दे रहे हैं–

७वां–सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बरतना चाहिए।

८वां–अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९वां–प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए; किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०वां–सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें।

सुधि पाठक ! स्वयं गम्भीरता से विचार करके देखिए परन्तु निष्पक्ष भाव से कि सभी नियम मानव धर्म के मान बिन्दु हैं या नहीं। कोई भी पक्षपात हीन व्यक्ति भले ही किसी भी उपासना–पद्धति अथवा जीवन–दर्शन को मानने वाला क्यों न हो, इन नियमों को मानवोचित और व्यावहारिक ही स्वीकार करेगा।

७. वेद का सार है 'मनुर्भव'

वेद की शिक्षाएं सार्वभौम हैं । किसी भी प्राणी को हिन्दू, सिख, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, जैन, किरानी, पुराणी कुछ भी बनने के लिए नहीं कहतीं । केवल 'मनुष्य बन' यही उपदेश देती हैं।

आदमी–आदमी जो बन जाए।
झगड़े सारे जहां के मिट जाएं।।

आज का मनुष्य सब कुछ बनना चाहता है केवल जो उसका वास्तविक स्वरूप है, उसे जो बनना है, वह उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं है।

वेद का उपदेश है कण–कण में ईश्वर की सत्ता है। इस संसार को मनुष्य के रूप में अपने जीवन–यापन के लिए भोग (भुञ्जीथाः) परन्तु (तेन त्यक्तेन) त्याग भाव से।

'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम् ।' ऐसे निवास कर कि सारा विश्व तेरे लिए घोंसला बन जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ।' सभी दिशाए मेरी मित्र बन जाए। 'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ।' हम सब को मित्र की दृष्टि से देखें।

सहृदयं सांमनस्यम् अविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्योऽन्यम् अभिहर्यत वत्सं जातमिवाऽघ्न्या।।

—अथर्ववेद

ईश्वर ने हमें सहृदय, एक मन वाला, बिना द्वेष के बनाया है। हम एक दूसरे से ऐसे स्नेह करें, जैसे गाय अपने नवजात बछड़े से प्यार करती है।

समानी वः आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

—ऋग्वेद

हम सब का जीवन का लक्ष्य एक हो, हृदय और मन एक हो, ताकि मिलकर जीवन में उस एक लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

मानव धर्म का ऐसा उच्चतम, श्रेष्ठतम और वरणीय स्वरूप अन्य कहां मिलेगा ?

आर्यसमाज वेद के आधार पर इसी मानवधर्म का ही प्रचार करता है। वैदिक धर्म या मानव धर्म उसे आप क्या नाम देते हैं, देते रहें। हमें नाम से नहीं, सुख शान्ति, समाज में समृद्धि, सेवा भावना, सामंजस्य, सहयोग, सत्याचरण, सदाचरण, संवेदना से परिपूर्ण हृदय, मननशील मनुष्य बनाने का लक्ष्य प्राप्त हो—यही अभिप्रेत है । आर्यसमाज इसी मानव धर्म की चेतना उत्पन्न करने के लिए निरन्तर कार्य कर रहा है।

—ई/३६, रणजीतसिंह मार्ग,
आदर्श नगर, दिल्ली—३३
दूरभाष : 7242431

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे प्रकाशन

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

आनन्द गायत्री कथा	१४.००
एक ही रास्ता	१४.००
शंकर और दयानन्द	८.००
मानव जीवन-गाथा	१४.००
सत्यनारायण व्रत कथा	६.००
भक्त और भगवान	१२.००
उपनिषदों का सन्देश	१८.००
घोर घने जंगल में	२२.००
मानव और मानवता	३२.००
प्रभु मिलन की राह	२२.००
यह धन किसका है ?	२२.००
बोध-कथाएँ	२०.००
दो रास्ते	१७.००
दुनिया में रहना किस तरह	१७.००
तत्त्वज्ञान	२२.००
प्रभु-दर्शन	१७.००
प्रभु-भक्ति	१२.००
महामन्त्र	१४.००
सुखी गृहस्थ	७.००
त्यागमयी देवियाँ	९.००
महात्मा आनन्द स्वामी (जीवनी)	२५.००

MAHATMA ANAND SWAMI

Anand Gayatri Katha	30.00
The Only Way	30.00
Bodh Kathayen	40.00
How To Lead Life?	30.00

महर्षि दयानन्द

व्यवहारभानु	४.००
सामन्तव्यामन्तव्यप्रकाश	१.५०
आर्योद्देश्यरत्नमाला	१.५०
पंचमहायज्ञ विधिः	८.००

ब्र. जगन्नाथ पथिक

सन्ध्या योग ब्रह्म साक्षात्कार	१२५.००
(वैदिक सन्ध्या से आलोक-प्राप्ति की पद्धति)	

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

सत्यार्थ प्रकाश (आधुनिक हिन्दी रूपान्तर)	१२५.००
महाभारतम् (तीन खण्ड)	६००.००
वाल्मीकि रामायण	१७५.००
षड्दर्शनम्	१५०.००
चाणक्यनीति दर्पण	६०.००
विदुरनीतिः (हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी)	४०.००
ब्रह्मचर्य गौरव	९.००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	९.००
कुछ करो कुछ बनो	१२.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१२.००
आदर्श परिवार	१८.००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	२५.००
वैदिक विवाह पद्धति	१५.००
ऋग्वेद सूक्ति सुधा	२५.००
अथर्ववेद सूक्ति सुधा	१५.००
सामवेद सूक्ति सुधा	१२.००
ऋग्वेद शतकम्	१०.००
यजुर्वेद शतकम्	१०.००
सामवेद शतकम्	१०.००
अथर्ववेद शतकम्	१०.००
भक्ति संगीत शतकम्	६.००
चमत्कारी औषधियाँ	१५.००
घरेलू औषधियाँ	१५.००
चतुर्वेद शतकम् (सजिल्द)	५०.००
स्वर्ग पथ	१२.००
प्रभात-वन्दन	८.००
प्रार्थना-प्रकाश	८.००
शिवसंकल्प	८.००
प्रार्थना लोक (सजिल्द)	४०.००
(प्रभात-वन्दन, प्रार्थना-प्रकाश व शिवसंकल्प एकत्र)	
वेद सौरभ	१२.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आचार्य उदयवीर शास्त्री

न्यायदर्शन भाष्य	१५०.००
वैशेषिकदर्शन भाष्य	१५०.००
सांख्यदर्शन भाष्य	१२५.००
योगदर्शन भाष्य	१००.००
वेदान्तदर्शन भाष्य (ब्रह्मसूत्र)	१८०.००
मीमांसादर्शन का विद्योदय भाष्य	३५०.००
सांख्यदर्शन का इतिहास	२५०.००
सांख्य सिद्धान्त	२००.००
वेदान्तदर्शन का इतिहास	२००.००
प्राचीन सांख्य सन्दर्भ	१००.००
वीर तरंगिणी (लेखों का संग्रह)	२५०.००

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

On The Vedas	35.00
दीप्तिः (विवादास्पद लेखों का संग्रह)	८०.००
आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे	४०.००
सृष्टि विज्ञान और विकासवाद	४०.००

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

सन्ध्या : क्या, क्यों, कैसे	१५.००
विवाह और विवाहित जीवन	१८.००
जीवात्मा	४०.००
भगवत् कथा (उपनिषदों के आधार पर)	१४.००

प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

ब्रह्मचर्य सन्देश	२५.००
वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	१५०.००

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

वैदिक ज्ञान-धारा (लेखों का संग्रह)	८०.००
महात्मा हंसराज (जीवनी)	६०.००
महात्मा हंसराज ग्रन्थावली (१ खण्ड) (सम्पूर्ण व्यक्तित्व व कृतित्व)	२४०.००
आर्य सूक्ति सुधा (आर्य विद्वानों की सूक्तियाँ)	१२.००

प्रो. नित्यानन्द पटेल

पूर्व और पश्चिम	३५.००
सन्ध्या विनय	६.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

बिखरे मोती (आर्य महापुरुषों के संस्मरण व शास्त्रार्थों की नोक-झोंक)	४०.००
स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (११ खण्डों में) (सम्पूर्ण कृतित्व व जीवनी)	६६०.००
आर्य समाज के बीस बलिदानी	१५..००
श्याम जी कृष्ण वर्मा (जीवनी)	२४.००
आर्य समाज विषयक साहित्य परिचय	२५.००

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

ऋषि बोध कथा	१०.००
वैदिक धर्म	२५.००

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

सहेलियों की वार्ता	२०.००

लेः देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय अनुः पं. घासीराम

महर्षि दयानन्द चरित (प्रामाणिक-अनूठा जीवन-चरित्र)	२५०.००

क्षितीश वेदालंकार

चयनिका (चुने हुए लेखों का संग्रह)	१२५.००

पं. रामनाथ वेदालंकार

वैदिक मधुवृष्टि (निबन्ध संग्रह)	६०.००

आ. प्रियव्रत वेदवाचस्पति

वेदोद्यान के चुने हुए फूल (वेद-मन्त्रों व सूक्तों का संग्रह)	५०.००

पं. चन्द्रभानु सिद्धान्ताभूषण

महाभारत सूक्ति सुधा	४०.००

पं. विश्वनाथ विद्यालंकार

सन्ध्या रहस्य	२५.००

प्रो. रामविचार एम.ए.

आर्य समाज का कायाकल्प कैसे हो ?	४.००

पं. नन्दलाल वानप्रस्थी

गीत सागर (अनेक कवियों के गीत-भजनों का संग्रह)	२५.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं. वीरसेन वेदश्रमी

याज्ञिक आचार संहिता ४५.००

वैदिक सम्पदा (वैदिक वाङ्मय के आधार पर मानवीय जीवन का विवेचन) १७५.००

नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रेरक बोध कथाएँ १५.००

पं. सत्यपाल विद्यालंकार

श्रीमद्भगवद्गीता १५.००

WORKS OF SVAMI SATYA PRAKASH SARASVATI

Founders of Sciences in Ancient India (Two Vols.) 800.00

Coinage in Ancient India (Two Vols.) 600.00

Geometry in Ancient India 350.00

Brahmgupta and His Works 350.00

The Critical, Cultural Study of Satapath Brahman In Press

Speeches, Writings and Addresses

Vol.I : VINCITVERITAS 150.00

Vol.II : ARYA SAMAJ : A RENAISSANCE 150.00

Vol.III : DAYANAND : A PHILOSOPHER 150.00

Vol. IV : THREE LIFE HAZARDS 150.00

चित्र

स्वामी दयानन्द (कुर्सी) १८" X २२" ३.००

स्वामी दयानन्द (आसन) १८" X २२" ३.००

स्वामी श्रद्धानन्द १८" X २२" एक रंग ३.००

गुरु विरजानन्द १८" X २२" एक रंग ३.००

पण्डित लेखराम १८" X २२" एक रंग ३.००

स्वामी दर्शनानन्द १८" X २२" एक रंग ३.००

गुरुदत्त विद्यार्थी १८" X २२" एक रंग ३.००

महात्मा हंसराज १८" X २२" एक रंग ३.००

स्वास्थ्य

जब प्रकृति की अनमोल दवाइयाँ आपको उपलब्ध हों तो पुड़िया आदि की क्या जरूरत है।

घर का वैद्य—प्याज ७.००

घर का वैद्य—लहसुन ७.००

घर का वैद्य—गन्ना ७.००

घर का वैद्य—नीम ७.००

घर का वैद्य—सिरस ७.००

घर का वैद्य—तुलसी ७.००

घर का वैद्य—आँवला ७.००

घर का वैद्य—नींबू ७.००

घर का वैद्य—पीपल ७.००

घर का वैद्य—आक ७.००

घर का वैद्य—गाजर ७.००

घर का वैद्य—मूली ७.००

घर का वैद्य—अदरक ७.००

घर का वैद्य—हल्दी ७.००

घर का वैद्य—बरगद ७.००

घर का वैद्य—दूध-घी ७.००

घर का वैद्य—दही-मट्ठा ७.००

घर का वैद्य—हींग ७.००

घर का वैद्य—नमक ७.००

घर का वैद्य—बेल ७.००

घर का वैद्य—शहद ७.००

घर का वैद्य—फिटकरी ७.००

घर का वैद्य—साग-भाजी ७.००

घर का वैद्य—अनाज ७.००

घर का वैद्य—फल-फूल ७.००

घर का वैद्य—धूप-पानी १५.००

सभी पच्चीस पुस्तकें पाँच आकर्षक जिल्दों में भी उपलब्ध, कीमत ४५.०० रुपये प्रत्येक

घर का वैद्य (प्याज, लहसुन, गन्ना, नीम, सिरस)

घर का वैद्य (तुलसी, आँवला, नींबू, पीपल, आक)

घर का वैद्य (गाजर, मूली अदरक, हल्दी, बरगद)

घर का वैद्य (दूध-घी, दही-मट्ठा, हींग, नमक, बेल)

घर का वैद्य (शहद, अनाज, साग-भाजी, फल-फूल, फिटकरी)

घर का वैद्य—धूप-पानी ४०.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बालोपयोगी

हरिशचन्द्र विद्यालंकार

वैदिक शिष्टाचार ३.००

पं. रामगोपाल विद्यालंकार

दयानन्द चित्रावली २५.००
(अनेक बहुरंगी चित्रों से सुसज्जित)

ब्र. नन्दकिशोर

आचार्य गौरव ५.००

पं. नारायण स्वामी

प्राणायाम विधि २.५०

सत्यभूषण वेदालंकार एम.ए.

नैतिक शिक्षा—प्रथम २.५०
नैतिक शिक्षा—द्वितीय ३.००
नैतिक शिक्षा—तृतीय ४.५०
नैतिक शिक्षा—चतुर्थ ५.५०
नैतिक शिक्षा—पंचम ५.५०
नतिक शिक्षा—षष्ठ ६.००
नैतिक शिक्षा—सप्तम ६.००
नैतिक शिक्षा—अष्टम ६.००
नैतिक शिक्षा—नवम ९.००
नैतिक शिक्षा—दशम ९.००

डॉ. देवव्रत आचार्य

योग शिक्षा-१ १२.००
योग शिक्षा-२ १०.००
योग शिक्षा-३ १०.००
योग शिक्षा-४ १०.००

कर्म काण्ड की पुस्तकें

आर्य सत्संग गुटका ४.००
पंचयज्ञ प्रकाशिका १०.००
वैदिक संध्या १.००
सामाजिक पद्धतियाँ (सदनजीत आर्य) १२.००
संध्या-हवन-दर्पण (उर्दू) ८.००

त्रिलोकचन्द विशारद

महर्षि दयानन्द ५.००
गुरु विरजानन्द ५.००
स्वामी श्रद्धानन्द ५.००
धर्मवीर पं. लेखराम ५.००
मुनिवर पं. गुरुदत्त ५.००
स्वामी दर्शनानन्द ५.००

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

महात्मा हंसराज ४.५०
स्वामी स्वतन्त्रानन्द ४.५०
महात्मा नारायण स्वामी ५.५०
देवतास्वरूप भाई परमानन्द ५.५०

सुनील शर्मा

हमारे बालनायक ९.००
देश के दुलारे ९.००
हमारे कर्णधार ९.००

नीरू शर्मा

आदर्श महिलाएँ १०.००

स्वामी दर्शनानन्द

कथा पच्चीसी ९.००
बाल शिक्षा २.५०

नरेन्द्र गुप्ता

सच का फल ८.००
(कथाएँ उपनिषद की)

डॉ. मनोहर लाल

जीने का सही ढंग (प्रेरक बोध कथाएँ) ८.००

डॉ. कृष्ण वल्लभ पालीवाल

वैदिक राष्ट्रीय ऋचाएँ १२.००

जीवनी

महात्मा आनन्द स्वामी (उर्दू) १०.००

आ. उदयवीर शास्त्री

आचार्य शंकर का काल १०.००

पं. वा. विष्णुदयाल (मॉरीशस)

वेद भगवान बोले १५.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्य प्रकाशन

डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार

आर्य समाज का इतिहास (भाग १)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग २)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ३)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ४)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ५)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ६)	३२५.००
प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग	५६.००
दक्षिणी-पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति	५८.००
पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी एशिया का आधुनिक इतिहास	७७.००
प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक और आर्थिक जीवन	७२.००
मध्य एशिया व चीन में भारतीय संस्कृति	५८.००
प्राचीन भारत	८०.००
भारतीय संस्कृति का विकास	७७.००
प्राचीन भारत की शासन संस्थाएँ और राजनीतिक विचार	५८.००
एशिया का आधुनिक इतिहास	१३०.००
यूरोप का इतिहास	१४०.००
समाजशास्त्र	८०.००
चाणक्य	६५.००
मौर्य साम्राज्य का इतिहास	१३५.००
भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास	५८.००
भारत का इतिहास	५५.००
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ	१७५.००
मध्यकालीन भारत	५८.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास	३२५.००
Political Thought of Swami Dayanand	150.00

डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

एकादशोपनिषद्	१२५.००
उपनिषद् प्रकाश	११०.००
श्रीमद्भगवद्गीता	१०५.००
संस्कार चन्द्रिका	१२०.००
बुढ़ापे से जवानी की ओर	९५.००
होमियोपैथिक चिकित्सा	१२५.००
होमियोपैथिक चित्रण	१२५.००
होमियोपैथी का क ख ग	१००.००
होमियोपैथी के मूल सिद्धान्त	८०.००
वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व	४०.००
From old age to youth through Yoga	80.00
चतुर्वेद गंगालहरी	९५.००
मेरी नानी की कहानी	३५.००
माँ और बच्चा	२५.००

महर्षि दयानन्द

सत्यार्थ प्रकाश	५०.००
संस्कार विधि	१०.००
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	४०.००
उपदेश मञ्जरी	१०.००
संस्कृत वाक्य प्रबोध	५.००
महर्षि दयानन्द (पं. लेखराम)	१००.००
Teachings of Gita	75.00
Light of Truth	125.00
Aryoudeshya Ratanmala	10.00

पं. भगवद्दत्त

सविता देवता	५८.००
बृहस्पति देवता	६५.००

पं. सुरेन्द्र कुमार

मनुस्मृति	१८०.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समर्पण शोध संस्थान के प्रकाशन

योगेश्वर कृष्ण (चभूपति एम.ए.)	४०.००
वैदिक स्वर्ग (,,)	३०.००
वैदिक दर्शन (,,)	१५.००
अनादि तत्त्व (,,)	२५.००
आर्य ज्योति (रामानाथ वेदा.)	५०.००
वेद मंजरी (,,)	५०.००
वैदिक नारी (,,)	४०.००
अग्निहोत्र सर्वस्व (स्वामी दीक्षानन्द)	१०.००
उपहार सर्वस्व (,,)	५.००
मृत्युञ्जय सर्वस्व (,,)	१०.००
स्वाध्याय सर्वस्व (,,)	१२.००
उपनयन सर्वस्व (,,)	१०.००
दो पुटन के बीच (,,)	८.००
ए लविंग टोकन	५.००
वेदामृत (श्रीपाद दामोदर सातवलेकर)	८०.००
पंचयज्ञ प्रकाश (स्वामी सर्म्पणानन्द)	२५.००
श्रीमद्भगवत गीता (समर्पण भाष्य)	२०.००
श्रुति सौरभ (शिवकुमार शास्त्री)	६०.००
वैदिक विनय (अभयदेव वेदा.)	१२५.००
वैदिक उपदेश माला (,,)	१०.००
सामवेद (पूर्व. उत्तरार्ध) (दो भाग)	४००.००
सामवेद (संस्कृत भाष्य) (दो भाग)	७००.००

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

आर्य समाज सिद्धान्त और प्रगति	४०.००
मनुष्य और मानव धर्म	१०.००
ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान	१०.००
प्रार्थना और चिन्तन	१२.००
हम क्या खाएँ घास या माँस	२५.००
The Parables & Dialogues from the Upnishadas	150.00
Self Life & Conciousness	12.00
Agnihotra	10.00
Architect of Arya Samaj	12.00
Man and his Religion	10.00
Critical Study of the Philosophy of Dayananda	50.00
Vedic Samdhya	8.00

स्वामी योगेश्वरानन्द

बहिरंग योग	७०.००
आत्मविज्ञान	८०.००
ब्रह्मविज्ञान	१००.००
दिव्य ज्योति विज्ञान	६०.००
प्राण विज्ञान	५०.००
दिव्य शब्द विज्ञान	६०.००
निर्गुण ब्रह्म	३०.००
व्याख्यानमाला (५ भाग)	१५०.००
हिमालय का योगी-I+II	१५५.००
First Step to Higher Yoga	70.00
Science of Soul	80.00
Science of Divinity	100.00
Science of Divine Light	65.00
Science of Vital Force	40.00
The Essential Colourlessness of the Absolute	40.00
Science of Divine Sound	40.00
Beads of Sermons	30.00
Himalaya Ka Yogi-I+II	160.00

पँ. कपिल देव द्विवेदी

सुखी जीवन	१८.००
सुखी गृहस्थ	१२.५०
सुखी परिवार	१८.००
आचार शिक्षा	१०.००
नीति शिक्षा	१०.००
वेदों में नारी	२०.००
सुखी समाज	१८.००
वैदिक मनोविज्ञान	१८.००
यजुर्वेद सुभाषितावली	२५.००
सामवेद सुभाषितावली	२५.००
अथर्ववेद सुभाषितावली	३५.००
ऋग्वेद सुभाषितावली	४०.००
वेदों में आयुर्वेद	९०.००
Vedic Samdhya & Agnihotra	30.00
The Essence of The Vedas	200.00

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नई बाल पुस्तकें

जागरण की वेला

नैतिकता, मानवता, धर्म, उदात्तता, दिव्यता—इन सब शब्दों में एक ही भाव-धारा प्रवाहित है । सच्चा मानव वही है, जिसे हर कोई प्यार करे । सच्चा धर्म भी वही है, जिसकी बातें हर किसी को प्यारी लगें । सभी बच्चे विश्वात्मा बनें, विश्व-मानव बनें, आर्य (श्रेष्ठ) कहलाएं—यही दिव्यता है, यही उदात्तता है, यही नैतिकता है, यही धर्म है । जो लोगों को वर्गों में बांट दे, वह केवल मजहब है, सम्प्रदाय है, मत है, पंथ है, वह धर्म नहीं हो सकता । नैतिकता या धर्म वही है जिसमें कोई ऊंच-नीच न हो, जो भाईचारा पैदा करे । सभी लोग, सभी बालक और बालिकाएं सब को साथ लेकर चलें, सभी एक-समान सोचें, सभी मिलकर श्रम करें, हर कोई सौ-सौ हाथों से कमाए और हजार-हजार हाथों से जरूरतमंदों में बांट दे, सभी बच्चे 'पीर पराई जानें'—यही वेदों का संदेश है, यही नैतिकता है, यहीं आर्यत्व है, यही विश्व-धर्म है ।

'नैतिक जागरण' के पांच भागों में हम कुछ ऐसे पाठ दे रहे हैं, जिन्हें सभी माता-पिता और गुरुजन अपने बच्चों या छात्रों को देना चाहेंगे।

यह पाठ-माला जहां सभी पाठशालाओं और वाचनालयों की शोभा बढ़ाएगी, वहां भेंट-उपहार के लिए सर्वोत्तम मानी जाएगी ।

प्रस्तुत माला की पुस्तकें—

१. सफल जीवन
२. सच्चा सुख
३. सेवा के वरदान
४. मन की उड़ान
५. आनन्द के स्रोत

(मूल्य प्रत्येक १०.०० रुपये)

सभी पुस्तकें आकर्षक आवरण, सुन्दर बहुरंगी चित्रों से सुसज्जित। साफ-शुद्ध छपाई ।

सत्य का फल (कथाएं उपनिषदों की)	८.००
जीने का सही ढंग (प्रेरक बोध कथाएं)	८.००
बाल जीवन-सोपान (स्वामी ब्रह्ममुनि)	१४.००

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विशेषांक

'अजब हैरान हूं भगवन्.....'

इस प्रसिद्ध भजन के लेखक सुप्रसिद्ध कवि तथा
पारसी रंगमंच के महान् नाटककार

पं. नारायणप्रसाद बेताब

के ऋषि दयानन्द के जीवन प्रसंगों पर

लिखे गये चार प्रसिद्ध मुसद्दसों (लम्बी कविताएं) का
प्रथम बार प्रकाशन

साथ में कवि बेताब के व्यक्तित्व, जीवन तथा कृतित्व की शोधपूर्ण जानकारी। बेताब जी का दुर्लभ चित्र भी दिया जा रहा है ।

सम्पादन : डॉ० भवानीलाल भारतीय

लगभग १०० पृष्ठों का यह विशेषांक अगस्त माह में आपको प्राप्त होगा। अपना वार्षिक शुल्क बीस रुपये आज ही भेजें। जिन सदस्यों का शुल्क ३१।७।९६ तक प्राप्त हो जाएगा उन्हें यह विशेषांक अगस्त ९६ में भेजा जाएगा ।

—अजयकुमार

निवेदन

'वेद' एवं 'दर्शनानन्द ग्रन्थ-संग्रह' के सदस्यों से

हमें कई सदस्यों के पत्र प्राप्त हो रहे हैं इन दोनों योजनाओं के सम्बन्ध में। चारों वेदों की मूल संहिताओं की छपाई शुरू हो चुकी है तथा शीघ्र ही यह ग्रन्थ आपके हाथों में होगा। हमें विश्वास है कि इसके शुद्ध एवं सुन्दर प्रकाशन पर आप सन्तोष व्यक्त करेंगे तथा विलम्ब से हुई असुविधा को भूल जाएंगे। इसके प्रकाशन के बाद 'दर्शनानन्द ग्रन्थ-संग्रह' भी शीघ्र ही आपको प्राप्त होगा।

आपसे निरन्तर प्राप्त सहयोग के लिए आभार सहित।

—अजयकुमार

प्रकाशक-मुद्रक अजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिण्टर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेदप्रकाश कार्यालय, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया ।
Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi